Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 3

No. of Printed Pages – 03

SS–34–DL–T.W. (Hindi) (D&D)

यहाँ से काटिए

उच्च माध्यमिक (मूक–बधिर) परीक्षा, 2023

SENIOR SECONDARY (D&D) EXAMINATION, 2023

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 2 घण्टा

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें ।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) हर प्रश्न के लिए 2 अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए –

टंकित अंक – 18
सजावट – 2
कुल अंक – 20

<u>बाल विकास और कल्पना</u>

बालकों की प्रवृत्तियों का उचित विकास होने में कल्पना का विशेष स्थान है । आरंभ में बालक किसी कार्य को नियमबद्ध कर सकने की क्षमता रख सकता इसलिए वह कल्पना शक्ति का सहारा लेता है । वास्तव में बालक का मानसिक एवं समस्त अन्य प्रकार की शक्तियों का आधार कल्पना शक्ति पर ही रहता है । कल्पना के आधार पर बालक देश, काल, पात्र सबका अतिक्रमण कर जाते है । इसी के द्वारा वे आत्मनिर्भरता, विपत्ति का सामना करना जीवन का आनंद लेना, अपरिचित से मिलना और अपनी योग्यता से अधिक काम कर दिखाना आदि कार्यों में सफल हो सकता है ।

बालकों में सब खेल कल्पना की उपज होती हैं । वे किसी भी विषय पर विश्वास कर लेते हैं और उसी आधार पर खेल–खेलकर प्रसन्नता प्राप्त कर लेते हैं । एक मामूली डंडे को घोड़ा बनाकर उस पर सवारी करना, किसी पेड़ की डाली पर बैठकर रेलगाड़ी चलाना, मिट्टी से मकान बनाना, मिट्टी का भोजन बनाना, बिना चूल्हे जलाए रोटी सेकना, उसको दूसरे बच्चों को खिलाना आदि सभी खेल कल्पना या मिथ्या विश्वास पर आधारित होते है । इस प्रकार के मिथ्या विश्वास के द्वारा ही बालक की अनेक समस्याओं का हल हो जाता है । संसार में आने वाली बहुसंख्यक बाधाओं का काल्पनिक अर्थ लगाकर, वह चिंतामुक्त रहकर जीवन का आनंद प्राप्त कर लेता है । वह समस्त विश्व को अपना ही समझता है और इसके लिए किसी प्रकार की दलील या प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

इससे बालक को अनेक प्रकार के लाभ होते है । वह सब प्रकार की परिस्थितियों का मुकाबला कर लेता है । वास्तविक जीवन में उत्पन्न होने वाली जटिलताओं का वह इसी से निवारण कर लेता है । सामाजिक जीवन का श्री गणेश भी इसी आधार पर होता है बालक अपने समवयस्क की संभव–असंभव प्रत्येक बात पर विश्वास करके उसके साथ घुल–मिल सकता है । इसी आधार पर वह धैर्य, आत्मसंयम, आत्मरक्षा, परोपकार, कृतज्ञता और अन्य प्रकार के सभ्य व्यवहार सीखता है । उस समय यद्यपि ये सब काल्पनिक खेलों के रूप में होते है, पर अप्रत्यक्ष रूप से बालक के स्वभाव के अंग बनते चले जाते हैं । इसी प्रकार उसके स्वभाव में जो परिवर्तन होता है, वह शिक्षकों की किसी भी शिक्षा द्वारा नहीं हो सकता ।

इस अवसर पर बड़े लोगों का कर्त्तव्य यही है कि बालक जो कुछ काल्पनिक जगत् में सीखता है, चतुरतापूर्वक उसे वास्तविक जगत् में भी अनुभव कराते रहें । यदि वह वास्तविक जगत् में, काल्पनिक जगत् की बातों से विपरीत परिस्थिति देखेगा तो उसका विकास बिल्कुल उलट जाएगा और वह अविश्वासी, झूंठा तथा दुर्गुणी बनने लगेगा ।

बालक को छोटी आयु से ही सौंदर्यप्रिय बनाना चाहिए । किसी–न–किसी प्रकार की सुंदरता का भाव उसके सम्मुख और मन में अवश्य आना चाहिए । इससे वह आगे चलकर सच्चरित्रयुक्त स्वभाव प्राप्त करने में सफल हो सकेगा । सौंदर्यप्रियता का स्वभाव हो जाने से उसकी दृष्टि अवगुणों, दोषों पर न पड़ेगी और वह पाप की बातों का विचार तथा अनुकरण करने से बचा रहेगा ।

फ्रांस के एक प्रसिद्ध दार्शनिक ने लिखा है कि बाल्यावस्था में उसके पिता सुंदर पद्य और गाना सुनाया करते थे, जिनमें स्वर तथा भाव दोनों प्रकार की मधुरता होती थी । उनके प्रभाव से बालक के विचार और कल्पनाएँ भी शुद्ध तथा श्रेष्ठ होती गई और वह दार्शनिक बनने में सफल हो सका । इसी प्रकार बच्चों को सुंदर और सद्भावपूर्ण चित्र दिखलाना भी उनके मन को अच्छी दिशा में मोड़ना है और वे उत्तम कल्पना करके उत्तम गुणों की तरफ झुकने लगते है । भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध के जीवन में संबद्ध घटनाओं के चित्र बालकों के लिए शिक्षाप्रद होते हैं ।

इस प्रकार कल्पना असहाय बाल्यावस्था में एक सहारा बनकर आती है । वह उसका हाथ पकड़कर आगे बढ़ाती है और भावी जीवन में मार्गदर्शन करती है । इस प्रकार बालक के सामान्य विकास में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान रहता है । कल्पना के सामान्य और सुरूचिपूर्ण विकास पर ही बालक का ठीक विकास निर्भर रहता है ।

कल्पना की वृद्धि तथा विकास के साथ ही अभिभावको का कर्त्तव्य है कि वे बालक को बीच–बीच में वास्तविकता की झाँकी भी कराते रहें । कल्पना से जो साहस, उत्साह, मनोबल उत्पन्न होता है ।

2) निम्न पत्र को यथोचित प्रारूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक – 8
सजावट – 2
कुल अंक – 10

सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
हिन्दुस्तान टाइम्स
विद्यानगर
बाँदा (उ. प्र.)

विषय :– बिजली संकट से उत्पन्न गंभीर स्थिति के संदर्भ में ।

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार–पत्र का एक नियमित पाठक हूँ । आपका समाचार पत्र आज भी जनता की आवाज बनकर लोगों की दैनिक समस्याओं का उचित हल ढूँढने में अत्यन्त सहायक साबित हो रहा है. इसलिए मैं भी अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न विकट स्थिति की ओर आपके समस्त पाठको, अधिकारियों एवं संबंधित विभाग का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ ।

हमारे क्षेत्र में बिजली के समय–समय पर गुल हो जाने से क्षेत्रवासियों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है । बोर्ड परीक्षाओं के दिनों में विद्यार्थियों के अध्ययन में बाधा आ रही है । इस भीषण गर्मी में बिजली नहीं मिलने से सभी का हाल बेहाल हो जाता है । अंधेरे का लाभ उठाकर रात्रि में कुछ लोग गैर–सामाजिक गतिविधियों को भी अंजाम देते है ।

समय रहते विभाग द्वारा बिजली की छीजत व पुराने उपकरणों का प्रतिस्थापन करावे लापरवाह कार्मिकों को पाबन्द कर जनसमस्याओं के निराकरण के लिए तत्पर रखें ।

अतः आपसे करबद्ध अनुरोध है कि विद्युत कटौती के इस मामले की गंभीरता को समझते हुए यथाशीघ्र एक प्रभावी लेख छाप कर बिजली संकट से उत्पन्न विकट स्थिति की ओर आपके समस्त पाठको अधिकारियों एवं संबंधित विभाग का ध्यान हमारी समस्याओं की ओर केन्द्रित करने की कृपा करावें ।

सधन्यवाद ।

भवदीय
अनूप

3) निम्न सारणी को यथोचित रूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक – 8
सजावट – 2
कुल – 10

विभिन्न देशों की तुलना

		2021 में नागरिको की मासिक आय (₹ में)			
क्र.सं	देश	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
1	भारत	8,100	9,000	9,600	9,800
2	नेपाल	600	650	700	750
3	श्रीलंका	500	400	300	350
4	मालदीव	650	700	750	600
5	पाकिस्तान	510	400	510	450
6	जापान	10,000	11,000	11,500	10,000
7	स्पेन	7,000	8,000	8,500	8,700
8	इजरायल	6,000	6,500	7,000	7,500
9	अफगानिस्तान	505	510	380	275
10	बांग्लादेश	3,000	2,700	2,900	3,100

□□□

DO NOT WRITE ANYTHING HERE